IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम
BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.22817248

ISSN : 3048-6971

" शाहाबाद में स्वतंत्रता संग्राम का स्वरूप"
(1857-1942 ई0 तक)

डॉ0 रोहित कुमार
सहायक प्राचार्य (इतिहास विभाग)
बाल्मीकि राजनीति महिला महाविद्यालय, मुंगेर
ई0 मेल- drrksingh.com@gmail.com

शोध सार:- आधुनिक बिहार के पश्चिम में स्थित शाहाबाद जिला भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में गौरवपूर्ण स्थान रखता है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के अपराजेय योद्धा बीर बाबू कुँअर सिंह का संघर्ष इसी क्षेत्र से प्रारंभ हुआ। गांधीवादी आंदोलन के विभिन्न चरण यथा असहयोग, सविनय अवज्ञा व भारत छोड़ों आंदोलन में शाहाबाद के लोगों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान ब्रिटिश दमन, अत्याचार व हिंसा का प्रकोप पूरे शाहाबाद में व्याप्त था। शाहाबाद के लोगों ने 1857 की प्रथम क्रांति से लेकर 1942 ई0 की आजादी की अंतिम महान लड़ाई तक संघर्ष में हिस्सा लिया और अपने शौर्य, साहस व बलिदान के असंख्य उदाहरण प्रस्तुत किए। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में शाहाबाद जिले की भूमिका का विश्लेषण करना है।

मुख्य शब्द :- शाहाबाद, ब्रिटिश, स्वतंत्रता, आंदोलन, कुँअर सिंह, गाँधी आदि

परिचय:- बिहार बंगाल से कटकर 1912 ई0 में एक नया प्रांत बना। इस प्रांत के पश्चिमी हिस्से में अवस्थित शाहाबाद का क्षेत्र अपने स्वर्णिम इतिहास के लिए जाना जाता है। महाजनपद काल में शाहाबाद मगध साम्राज्य का हिस्सा था। सातवीं शताब्दी में विख्यात चीनी यात्री हवेनसांग शाहाबाद के 'मो-हो-सोलो' में आया था। आज उस जगह की पहचान मसाढ़ गाँव के रूप में की गई है।[1] जो आरा-बक्सर सड़क पर आरा से 10 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है। मुगलकाल में बाबर इस क्षेत्र में आया और आरा में रहकर अफगानों को 1529 ई0 में पराजित कर इस क्षेत्र का नाम 'शाहाबाद' रखा जिसका अर्थ है 'शाहों का शहर'।[2]

ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विस्तार काल में हुए बक्सर के युद्ध (1764 ई0) के बाद बिहार ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रत्यक्ष नियंत्रण में आ गया। प्रशासनिक सुविधा की दृष्टि से अंग्रेजों ने 1787 ई0 में 'शाहाबाद' को एक जिले के रूप में स्थापित किया। स्वतंत्रता के पश्चात् बिहार सरकार ने 1972 ई0 में शाहाबाद जिले को भोजपुर और रोहतास जिले में विभाजित कर दिया। कालांकर में भोजपुर जिले से बक्सर एवं रोहतास से कैमूर जिले बने। कल का 'शाहाबाद' आप के चार जिले - भोजपुर, रोहतास, बक्सर व कैमूर में विभक्त है।

1857 का महाविद्रोह एवं शाहाबाद :- 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शाहाबाद का अविस्मरणीय योगदान था। 1845-46 ई0 से ही इस क्षेत्र में ब्रिटिश विरोध की भावना जाग्रत होने लगी थी। ब्रिटिश विरोधी षड्यंत्रों की गुप्त सूचना से अंगरेजी सरकार में भय का आतंक बढ़ चुका था। आसन्न खतरे को भांपते हुए जगदीशपुर के अस्सी वर्षीय वयोवृद्ध जमींदार कुँअर सिंह ने अपने जगदीशपुर के दुर्ग को सुदृढ़ करना शुरू कर दिया था और उनके देखरेख में सिपाहिंयों की भर्ती का कार्य भी आरम्भ हो चुका था। चर्बो वाली कारतूस की घटना से आक्रोशित भारतीय सिपाही जो अंग्रेजी सेना के छावनियाँ बैरकपुर एवं बहरामपुर से निष्काषित कर दिए गए थे वे शीघ्र ही कुँअर सिंह की सेना में

शामिल हो गए, परिस्थतियों ने कुँअर सिंह को ब्रिटिश सत्ता का विरोधी बना दिया। कुँअर सिंह ने जब अंगरेजों के विरूद्ध तलवार उठाई तब उसकी अवस्था अस्सी वर्ष की थी। आधुनिक भारत भूमि के इतिहास में कुँअर सिंह जैसा रणबाकुड़ा का दूसरा उदाहरण नहीं मिलता है। इस बूढ़े राजपूत ने लगभग दर्जन भर ख्याति प्राप्त अंग्रेज सेनापतियों से लोहा लिया और मरते दम तक पराजित नहीं किये जा सके। उस युग से आज तक की यह अनोखी घटना है। इस प्रकार, कुँअर सिंह भारतीय रणबाकुड़ों की अमर गाथा में अपराजेय योद्धा के रूप में प्रसिद्ध हैं, जिनकी वीर गाथा बिहार के घर-घर में आज भी सुनी-सुनायी जाती है।

अंगरेजों की लाख कोशिशों के बाद भी शाहाबाद लंबे समय तक स्वतंत्र रहा। आरा, जगदीशपुर, बिहियां पर कुँअर सिंह का प्रत्यक्ष नियंत्रण था। कालांतर में आरा तथा जगदीशपुर पर अंग्रेजी कब्जा होने के बाद कुँअर सिंह बांदा, रीवा, आजमगढ़, बनारस, बलिया, गाजीपुर, गोरखपुर आदि जगहों पर अंग्रेजों के नाक में दम कर दिया था। इस प्रकार कुँअर सिंह ने युद्ध का दायरा शाहाबाद से निकालकर अवध तक में विस्तारित कर दिया था और अपने जीवन के अंतिम समय तक स्वतंत्र रहे। कुँअर सिंह की प्रशंसा करते हुए ब्रिटिश इतिहासकार होम्स ने उनके बारे में लिखा था "उस बूढ़े राजपूत ने ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध अद्भूत वीरता और आन-बान-शान के साथ लड़ाई लड़ी। यह गनीमत थी कि युद्ध के समय कुँअर सिंह की उम्र अस्सी वर्ष के करीब थी। अगर वह जवान होते तो शायद अंग्रेजों को 1857 में ही भारत छोड़ना पड़ता।"[3]

कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद उनके अनुज अमर सिंह ने क्रांति की ज्वाला को जगाए रखा। अमर सिंह छापामार युद्ध प्रणाली के महारथी थे। बिहिया, हातमपुर, दलीपपुर और कई अन्य स्थानों अंग्रेजों के साथ अमर सिंह का मुकाबला हुआ। ज्योंही अमर सिंह देखते दुश्मन की स्थिति मजबूत है, वे अपने सिपाहियों को छोटे-छोटे दलों में विभक्त कर विभिन्न दिशाओं में पीछे हट जाते। फिरंगी ठीक से चैन भी नहीं पाते थे कि अमर सिंह अपनी सेना को तैयार कर जंगल के दूसरे सिरे पर नजर आते। छापामार युद्ध कौशल से उन्होंने अपने दुश्मन को हताश, परेशान कर दिया। पीछा करते दुश्मनों से बचते हुए अमर सिंह कैमूर की पहाड़ियों में छिप गए। इन पहाड़ियों से अमर सिंह लम्बे समय तक अंग्रेजों के विरूद्ध छापामार युद्ध करते रहे।

उन्होंने गया तथा सासाराम के बीच संचार व्यवस्था नष्ट कर दी थी। कैमूर की पहाड़ियों में मोर्चा बनाकर वे सासाराम, नोखा तथा रोहतास तक के इलाके पर अपना प्रभाव तथा नियंत्रण स्थापित कर लिया था। शाहाबाद जिले के दक्षिणी भाग में अमर सिंह की उपस्थिति अंग्रेजों के लिए सिरदर्द बनी रही। अंग्रेजी सरकार ने अमर सिंह को गिरफ्तार कराने हेतु इनाम की राशि 2000 रूपये से बढ़ाकर 5000 रूपये कर दी थी। फिर भी अमर सिंह गिरफ्तार नहीं किये जा सके। पटना के आयुक्त के प्रतिवेदन से यह पता चलता है कि अमर सिंह का प्रभाव पूरे शाहाबाद में लंबे समय तक बना रहा। पटना के आयुक्त ने 27 जून 1858 को बंगाल के गवर्नर के पास प्रतिवेदन भेजा कि "लगभग समूचा शाहाबाद विद्रोहियों के हाथों में चला जा रहा है। वे अब पुल तोड़ रहे हैं जिससे बरसात में सैनिक नहीं आ सके। आरा, वरांव, रामगढ़ और चौसा के दारोगा को छोड़कर ट्रंक रोड के उत्तरवर्ती क्षेत्रों के सभी पुलिस अधिकारी एवं जवानों को अपने-अपने थानों को छोड़कर चले जाने को बाध्य होना पड़ा है।"[4]

अमर सिंह के छापामार युद्ध प्रणाली ने मार्क्स और एंगेल्स का भी ध्यान आकर्षित किया था। 1 अक्टूबर 1858 को 'न्यूर्याक डेली ट्रिब्यून' में प्रकाशित 'भारत में विद्रोह' शीर्षक लेख में एंगेल्स ने अमर सिंह के छापामार युद्ध कला की प्रशंसा की थी।'[5] 1857 की क्रांति में कुँअर सिंह तथा अमर सिंह के साथ शाहाबाद की आम जनता की भागीदारी भी कम महत्वपूर्ण नहीं थी, क्योंकि इतना लंबा एवं भीषण संघर्ष बिना जन भागीदारी के होना असंभव सा है। अंग्रेजों के लाख प्रयत्नों एवं अत्याचारों के बावजूद शाहाबाद की जनता इनकी गुप्त सूचना छिपाती रही। 1857 की क्रांति में शाहाबाद की भागीदारी की प्रशंसा करते हुए इतिहासकार बी0एल0 ग्रोवर, यशपाल ने लिखा है कि 1857

के विद्रोह में देश की बहुसंख्या तटस्थ और उदासीन रही। इस विद्रोह में अवध और शाहाबाद जिले के अतिरिक्त कहीं भी सामान्य समर्थन प्राप्त नहीं किया।[6]

पटना प्रमंडल के कमिश्नर श्री ई0 ए0 सैमुयेल्स ने बंगाल सरकार के सचिव ए0 आर0 यंग को इस आंदोलन पर अपना विचार व्यक्त करते हुए 25 सितम्बर, 1858 को अपने पत्र में 'व्यापक भारतीय विद्रोह' कहकर इसका परिचय दिया और आगे लिखा कि ".....शाहाबाद में आंदोलन ने राष्ट्रीय विप्लव की समस्त गरिमा प्राप्त कर ली थी।"[7] उक्त अंग्रेजा अधिकारी के इस पत्र ने स्पष्ट कर दिया था कि 1857 के विद्रोह में शाहाबाद के लोंगों का प्रतिरोध एवं भागदारी राष्ट्रव्यापी विद्रोह जैसा स्वरूप धारण कर चुकी थी। टी0 आर0 ई0 होम्स ने भी अपनी पुस्तक **'A History of Indian Mutiny'** में लिखा है कि "आरा जो एक मुख्य शहर था इस डिवीजन का सबसे अशांत जिला था।"[8]

गांधीवादी आंदोलन एवं शाहाबाद : 1917 में गांधीजी का आगमन बिहार के चंपारण जिले में हुआ। वहां के नील किसान लम्बे समय से अंग्रेजी शोषण व उत्पीड़न के शिकार थे। गांधीजी ने सत्य, अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह का सफल प्रयोग कर नीलहे किसानों को अंगरेजी अत्याचार से मुक्ति दिलाई। इस सफलता ने शाहाबाद के लोगों में गांधीजी एवं कांग्रेस के प्रति आपार श्रद्धा उत्पन्न की शाहाबाद के अनेक लोगों ने गांधीवादी विचारधारा में गहन आस्था व्यक्त की और धीरे-धीरे स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। सासाराम के निकट बहुआरा ग्राम के मूल निवासी भवानी दयाल सन्यासी की भूमिका स्वतंत्रता आंदोलन में उल्लेखनीय रही है। दक्षिण अफ्रीका में वे गांधीजी के विशिष्ट सहयोगी थे। भवानी दयाल सन्यासी के पिता बाबू जयराम सिंह गिरमीटिया मजदूर बनकर दक्षिण अफ्रीका गए थे। वहीं पर भवानी दयाल सन्यासी का जन्म हुआ था। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों के अधिकार तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

1914 में महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण अफ्रीका में निकाले जा रहे अखबार 'इंडियन ओपिनियन ' के संपादकीय टीम में शामिल थे। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए 'ट्रांसवाल हिंदी प्रचारिणी सभा' की स्थापना की थी। इसके संपादन में 'कर्मवीर' नामक हिंदी साप्ताहिक भी निकाला। 1927 में वे भारत लौटे तथा स्वतंत्रता संग्राम में सक्रियता से भाग लिया। उन्हें शाहाबाद जिला कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया। 1930 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने जेल से ही 'कारागार' नामक हस्तलिखित मासिक पत्र निकाला। भवान दयाल सन्यासी जेल से छूटने के बाद भी स्वाधीनता संग्राम में भाग लेते रहे। उन्होंने पत्रकारिता के साथ-साथ कई पुस्तकों का लेखन भी किया। जिसमें 'दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह का इतिहास', 'सत्याग्रही महात्मा गांधी', 'ट्रांसवाल में भारतवासी' आदि महत्वपूर्ण है। अपनी लेखनी एवं विचारों से भवानी दयाल सन्यासी लोगों को स्वाधीनता संग्राम के लिए प्रेरित करते रहे। इसप्रकार, उन्होंने अपने वैचारिक एवं लेखनी से शाहाबाद में स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दिलाई।[9]

गाँधीजी के नेतृत्व में जब अखिल भारतीय स्तर पर असहयोग तथा खिलाफत आंदोलन की प्रगति हुई तो शाहाबाद भी इससे अछूता न रह सका। 1921 के प्रारंभिक महीनों में पीरों में एक सभा का आयोजन हुआ। जिसमें यह निर्णय हुआ कि दीवानी और फौजदारी मुकदमों की सुनवाई के लिए पंचायत की स्थापना की जाए। इसके लिए थाना राजपुर के ग्राम रजौली और डयोढ़िया में पंचायत की स्थापना की गयी। यह ब्रिटिश न्याय व्यवस्था और न्यायालय पर एक प्रहार था। इसी तरह की अन्य पंचायत न्यायालय की स्थापना शाहाबाद जिले के बड़हरा, शाहपुर, डुमराँव और ब्रह्मपुर थाना के कई गाँवों में की गई।

छात्रों को राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली से जोड़ने के लिए विक्रमगंज थाना के ग्राम कवाथ में एक राष्ट्रीय स्कूल खोला गया। कई सरकारी स्कूलों के शिक्षक एवं छात्र सरकारी व्यवस्था को छोड़कर राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली से जुड़ने लगे। इसमें आरा टाउन स्कूल के शिक्षक शिवपूजन सहाय, बड़हरा संस्कृत स्कूल के शिक्षक पं0 सूरज प्रसाद तिवारी

और रामदेव तिवारी प्रमुख थे। बाबू विन्ध्यावासिनी प्रसाद वकालत छोड़ने के बाद आरा राष्ट्रीय विद्यालय के प्रधानाध्यापक बने।

असहयोग आंदोलन में प्रगति लाने के उद्देश्य से शाहाबाद के प्रमुख नगर आरा में 17 फरवरी 1921 को एक सभा का आयोजन हुआ। इसमें डा0 राजेन्द्र प्रसाद मुख्य वक्ता थे। इनके अतिरिक्त जगत नारायण लाल, श्रीराम काश्मीरी और डा0 वर्मा ने ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा हमारे देश के जुलाहों पर अत्याचारों का उल्लेख किया और कहा कि इन्हीं के कारण हमारे सूती वस्त्र व्यवसाय में ह्रास हो गया। अब्दुल बारी ने आरा के चौक मस्जिद में 21 फरवरी को एक भाषण दिया। आरा के जोरा मंदिर में 27 फरवरी को असहयोग कार्यक्रम का संदेश देने के लिए सभाएँ की गई। इसमें स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने भाषण दिया। ब्रह्मपुर, सहार, क्वाथ और भभुआ में भी जन सभाएँ की गई। राजेन्द्र प्रसाद ने भभुआ में एक विशाल जनसमूह के समक्ष भाषण दिया। उनके अतिरिक्त गया प्रसाद, विन्ध्यवासिनी प्रसाद और जयप्रकाश लाल आदि नेताओं ने भाषण दिया। जिसमें ब्रिटिश सरकार के अत्याचार, शोषण की बातें बताई गई और लोगों को एकजुट रहने, देश को स्वतंत्र कराने के लिए निरंतर प्रयास करते रहने का संदेश दिया गया।

शाहाबाद जिले के कुछ क्षेत्रों में असहयोग आंदोलन सघन एवं चरम पर पहुंच गया। मार्च के अंत में एक पुलिस अधिकारी जो क्वाथ आया था लिखता है कि असहयोग आंदोलन ने काफी जोर पकड़ लिया था।[10] 20 मार्च को 'आरा राष्ट्रीय विद्यालय' में एक सभा हुई। उसमें कई लोगों ने भाषण दिया और प्रचार कार्य के लिए एक निश्चित कार्यक्रम निर्धारित किया गया। शाहाबाद जिला को अनुमंडल के आधार पर चार भागों में बाँट दिया गया और उनमें एक मुख्य अधीक्षक नियुक्त किया गया।

1921 के आरांभिक महीनों में संपूर्ण शाहाबाद में असहयोग आंदोलन की लहर फैल चुकी थी। उसे दबाने के लिए सरकार तरह-तरह के हथकंडे का इस्तेमाल कर रही थी। आरा के आरक्षी अधीक्षक से यह सूचना मिला कि श्री मजहरूलहक और श्री राजेन्द्र प्रसाद 17 फरवरी को आरा आने वाले थे। यहाँ के जिला मजिस्ट्रेट जान्सटन ने उसके एक दिन पहले धारा 144 के अंतर्गत उनपर आरा नहीं आने के आदेश की अधिसूचना लागू कर दी। अधिसूचना का उल्लंघन करने पर भारतीय दंड संहिता की धारा 188 के अंतर्गत सजा दी जाने की व्यवस्था थी। इस आदेश की प्रतिलिपि राजेन्द्र प्रसाद को उनके 17 फरवरी को आरा रेलवे स्टेशन पर पहुँचने पर तामील की गई।[11] इस घटना से शाहाबाद के लोगों में ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध रोष व्याप्त हो गया। बाबू देवकी प्रसाद और रायबहादुर द्वारकानाथ ने इस मामले पर बिहार विधानसभा परिषद में 24 फरवरी 1921 को प्रश्न पूछे। देवकी बाबू ने सरकार से यह कहा कि 'बाबू राजेन्द्र प्रसाद की गतिविधि में हस्तक्षेप से प्रदेश की जनता को व्यापक क्षोभ हुआ है। भभुआ के लोगों में असहयोग आंदोलन को लेकर बढ़ती हुई चेतना के कारण भभुआ के अनुमंडल अधिकारी ने एक आदेश जारी करके लोगों को सार्वजनिक सड़कों या पार्कों या अन्य निजी स्थानों पर सार्वजनिक सभा नहीं करने का आदेश जारी किया था।

शाहाबाद जिला के थाना बड़पुर ग्राम जोगिया के लक्ष्मी नारायण मिश्र ने गायघाट में एक राष्ट्रीय स्कूल खोला। एक अन्य स्कूल थाना-बक्सर ग्राम- सिमरी में जून 1921 में खोला गया। 20 अप्रैल, 1921 को भभुआ के अनुमंडलाधिकारी ने शहाबाद के मजिस्ट्रेट को लिखा " कुदरा और भभुआ में असहयोग आंदोलन के संबंध में प्रस्तुत पखवारे में सभाएँ हुई है। सासाराम के शाह वहीरूद्धीन और नियाजुद्धीन ने 11 अप्रैल 1920 को कुदरा मे सभा की है, 13 अप्रैल को भभुआ शहर में पूरा हड़ताल हुआ है।" बंद की सफलता ने यह दिखला दिया कि जनता का समर्थन जोरों पर है। 'चावल की मुठिया की प्रथा' भभुआ और मोहनिया थाना में जड़ पकड़ती जा रही थी। इसके साथ ही

पंचायतों और सेवा-समितियों की स्थापना तेजी से चल रही थी। गाँव वाले आपसी विवाद पंचायत ले जाकर सरकार को चुनौती दे रहे थे।

नशाबंदी आंदोलन भी शाहाबाद जिले में विशेष प्रगति कर रहा था। शाहाबाद जिले में धारा 107 के अंतर्गत कुछ लोगों पर आरोप लगे कि वे दुकानदारों को शराबखाना में काम करने वालों के हाथ आवश्यक वस्तुओं को बेचने से जबरन रोकते थे जिससे वे शराबखाना में काम करना छोड़ दे। असहयोग आंदोलन के क्रम में हिंदू मुस्लिम एकता सुदृढ़ करने के उद्देश्य से गांधीजी ने बिहार की सात दिनों की यात्रा की। इस यात्रा में मौलाना मोहम्मद अली, अब्दुल कादिर शुभानी, सेठ जमुना लाल बजाज और कुछ अन्य नेता थे। गांधीजी इन नेताओं के साथ शाहाबाद जिले के बक्सर, डुमराव, कवाथ, विक्रमगंज और सासाराम की यात्राएँ की। इन यात्राओं में शाहाबाद के काफी लोग शामिल हुए। गांधीजी की इस सात दिवसीय यात्रा ने शाहाबाद के लोगों के भीतर संघर्ष के नए जोश उत्पन्न किए।

इसी क्रम में बिहार प्रान्तीय सम्मेलन की बैठक आरा में अक्टूबर 1921 को आरंभ हुई। मौलाना मोहम्मद शफी ने इसकी अध्यक्षता की। एक प्रस्ताव स्वीकृत कर प्रिंस ऑफ वेल्स (ब्रितानी युवराज) के बिहार आने पर बहिष्कार करने का निर्णय लिया गया। सम्मेलन में जनता का ध्यान आकृष्ट किया गया तथा आशा प्रकट की गई कि "सरकारी धमकियों एवं दमन से अविरत प्रान्त की जनता निर्भयतापूर्वक एवं पूर्ण अहिंसा की नीति पर चलते हुए स्वदेशी के मार्ग पर चलती रहेगी। जिससे उसके प्रान्त में विदेशी वस्त्रों का पूर्ण बहिष्कार सफल हो।"[12] इसी अवसर पर सेवा संबंधी आंदोलन में अभिरूचि रखने वाले लोगों की एक विशेष बैठक 3 अक्टूबर 1921 को आरा में हुई। उसे प्रभावी बनाने के लिए एक केन्द्रीय समिति का गठन किया गया और नवम्बर के अंत में पूरे प्रान्त में विभिन्न सेवा समितियों की संख्या बढ़कर 1500 तक हो गई। इस प्रकार, असहयोग एवं खिलाफत आंदोलन में शाहाबाद के लोगों का अपूर्ण योगदान था। इन आंदोलन में शाहाबाद जिले के सभी वर्ग के लोगों ने हिस्सा लिया और आंदोलन को गति एवं दिशा प्रदान की।

1928 में साइमन कमीशन भारत आया। इस कमीशन में किसी भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया। साथ ही क्रांतिकारियों की गैरकानूनी गिरफ्तारी के कारण जनता में राष्ट्रवादी भावना पनपने लगी थी। इसी बीच ब्रिटिश सरकार ने नमक पर एकाधिकार की घोषणा कर दी। सरकार द्वारा नमक पर नियंत्रण स्थापित करने के विरोध में गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन आरंभ कर दी। इसकी शुरूआत दांडी मार्च से हुई। शाहाबाद के लोगों में भी नमक कानून भंग करने का जोश बढ़ गया। बबुरा, एकौना, केशवपुर, बड़हरा, सबलपुर, लौहर फरना, शाहाबाद में नमक आंदोलन के प्रमुख केन्द्र थे। सासाराम के भवानी दयाल संन्यासी एवं डिहरी के अब्दुल कयूम अंसारी ने नमक आंदोलन को आगे बढ़ाया। चैगाई गाँव के 'शाहाबादी शेर' के नाम से चर्चित सरदार हरिहर सिंह ने आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए मैट्रिक की परीक्षा में सम्मिलित होने से पूर्व ही स्वतंत्रता संग्राम की जंग में कूद पड़े। 1930 में नमक सत्याग्रह के दौरान उन्होंने अपने गाँव स्थित सीढ़ीनुमा कुँआ के पास नमक बनाया और अंग्रेजों के नमक कानून को तोड़ा। बाद में वे गिरफ्तार हुए।[13]

नमक सत्याग्रह के दौरान शाहाबाद जिले के मुख्यालय आरा में भी एक अनोखी घटना घटी। महिला सत्याग्रहियों का एक दल आरा कचहरी में जाकर वकीलों पर दबाव डाला कि वे कचहरी का बहिष्कार करें। महिला सत्याग्रहियों ने एक गुप्त बैठक का भी आयोजन किया, जिसमें सविनय अवज्ञा आंदोलन को और भी सशक्त प्रभावी बनाने की योजनाओं पर मंथन किया गया।[14] इसी क्रम में शाहाबाद के शिवपुर गाँव की सावित्री देवी को आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के कारण ब्रिटिश सरकार ने गिरफ्तार कर दो महीने की कारावास की सजा सुनायी।[15] शाहाबाद जिले के श्री रामबहादुर बार-एट लॉ की पत्नी ने सासाराम थाने के समक्ष नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया।[16]

महात्मा गाँधी सविनय अवज्ञा आंदोलन में बिहार की महिलाओं की भूमिका से बहुत प्रभावित थे। शाहाबाद में महिलाओं के सभी वर्गो विशेष रूप से मध्यम और निम्न वर्ग ने इसमें भाग लिया, महिलाओं ने सरकारी आदेशों की अवहेलना की और स्वतंत्रता की खातिर अपने साहस का प्रदर्शन किया। कालांतर में देश की राजनीतिक स्थिति में उतार-चढ़ाव, घटनाओं की घात-प्रतिघात तथा आंदोलन के प्रति जन उत्साह में कमी देखकर गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को वापस ले लिया, शाहाबाद में भी यह आंदोलन थम गया।

अगस्त क्रांति भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष की अंतिम महान लड़ाई थी। इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार की नींव हिलाकर रख दी। क्रिप्स मिशन की असफलता एवं द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भारत की गंभीर स्थिति ने गांधीजी को एक और आंदोलन छेड़ने को बाध्य कर दिया। 8 अगस्त 1942 ई0 को गांधीजी ने बम्बई में 'करो या मरो ' का नारा देते हुए आरंभ किया। शाहाबाद में यह आंदोलन अभूतपूर्व रूप से फैल गया। शाहाबाद के सैकड़ों लोगों ने जंगे-आजादी में अपनी आहुति दे डाली। हजारों लोगों ने अंगे्रजों की लाठी, डंडों एवं कोड़ों की मार सही। असंख्या लोग गिरफ्तार कर जेल के सलाखों के पीछे पहुंचा दिए गए। लोगों को असहनीय यातना सहनी पड़ी, परंतु शाहाबाद के वीरों ने दमनकारी ब्रिटिश सत्ता के सामने झुकने से इंकार कर दिया।

अगस्त क्रांति में आरा, भभुआ, सासाराम, डुमरांव, पीरो, गड़हनी, चरपोखरी, संफौली, नोखा, कुदरा, चैनपुर, रामगढ़, विक्रमगंज, डालमियानगर, हसन बाजार, ब्रह्मपुर, शाहपुर सहित अन्य स्थानों पर हजारों लोग 9 लगस्त के अहले सुबह घर से बाहर सड़कों पर निकल आए। हर किसी के हाथ में तिरंगा लहरा रहा था। जोश से भरे लोंगो ने सरकारी दफ्तरों पर तिरंगा फहरा दिया। आरा, शाहपुर, सासाराम, डुमरांव सहित कई स्थानों पर अंग्रेजी पुलिस ने निहत्थी भीड़ पर गोलिया बरसायी। फिर भी सासाराम थाना डेढ़ महीने तक जनता के कब्जे में रहा। चैनपुर, भभुआ, रामगढ़ थानों में जनता ने अपनी शासन प्रबंधक समितियाँ बनाई। सेमराव, गड़हनी, चरपोखरी, धनौती, हसन बाजार, डिहरी, बिक्रमगंज, कुदरा एवं डुमरांव रेलवे स्टेशनों में उग्र जनता ने आग लगा दी। पीरों के विद्यार्थियों के एक जत्थे ने ट्रेन पर अपना कब्जा जमा लिया था। सासाराम, नोखा, डालमियानगर, बिक्रमगंज, भभुआ, रामगढ़ एवं डुमरांव के डाकखाने जला दिये गए।[17] अगस्त क्रांति के दौरान शाहाबाद की कुछ महिलाएँ पुलिस की गोली से शहीद हुई थी। शाहाबाद में लसाढ़ी गाँव के शिवगोपाल दुसाध की पत्नी 'अकेली देवी' महत्वपूर्ण है।[18] हरदिया गाँव, थाना-जगदीशपुर जिला शाहाबाद की श्रीमती फूल कुमारी विध्वंसक गतिविधियों में बहुत सक्रिया थी। उन्होंने एक हिंसक भीड़ का नेतृत्व किया। बिहिया स्थित पुलिस चौकी को नुकसान पहुँचाया तथा वहां पर रखी बंदूकों पर कब्जा कर लिया, उनके मार्गदर्शन में भीड़ ने बिहिया रेलवे स्टेशन और डाकघर को जला दिया। इसके बाद उन्होंने कारीसाथ से बिहिया तक रेलवे लाइनों , डाकघरों आदि को नुकसान पहुँचाया। फुलकुमारी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। जेल से रिहा होने के पश्चात् वह अनुमंडल पदाधिकारी के पास गयी और उन्हें चूड़ियाँ भेंट करना चाहा। इस कारण उन्हें दोबारा गिरफ्तारी किया गया और जेल भेज दिया गया। जेल से रिहा होने के बाद वह बीमार हो गई और उनका निधन हो गया।[19]

डालमियानगर में रोहतास उद्योग के मजदूरों ने 6 अगस्त को एक जुलूस निकाली तथा संध्या में एक सभा की। सभा में नेताओं की गिरफ्तारी की आलोचना की गई। 10 अगस्त को कंपनी के श्रम अधीक्षक श्री परमहंस ने कर्मकारों को कारखाना बंद कर देने और पुकार होने पर आंदोलन में सम्मिलित होने की अपील की।[20] पूरे शाहाबाद में कुछ जनता तोड़-फोड़ की कार्रवाइयों में लगी थी। सरकार की ओर से भयंकर दमन की कार्रवाइयां चल रही थीं आरा में सैंनिकों एवं पुलिस ने 14 अगस्त को एक उत्तेजित भीड़ पर गोली चलाकर कई लोगों को हताहत कर दिया। सैनिकों की एक टुकड़ी आरा से सासाराम गई। वहां एक भीड़ पर गोली चलाकर तीन लोगों को मार डाला और सत्रह लोगों को घायल कर दिया। दो सैनिक टुकड़ियां गया से डेहरी और सासाराम भेजी गयी। भभुआ में भी गोली चली

और कुछ लोग हताहत हुए। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार एक व्यक्ति मारा और और आठ घायल हुए। सासाराम नगर में एक अगस्त को पुलिस के हाथों मारे गए व्यक्तियों की लाशें एक जुलूस में लाई जा रही थी, उसे लाठी चार्ज कर तितर-बितर कर दिया गया।[21]

15 अगस्त को एक उत्तेजित भीड़ ने बक्सर सेंट्रल जेल पर आक्रमण करके इसके मुख्य फाटक को खोल दिया किन्तु पुलिस ने लाठी चार्ज करके तथा गोली चलाकर उसे खदेड़ दिया। 16 अगस्त को सशस्त्र घुड़सवारों के पुलिस सैंनिकों को एक दल दानापुर से आरा आया। सशस्त्र पुलिस ने आरा नगर के अहिरपुरवा मोहल्ला में नहर की सड़क काटते हुए एक भीड़ पर गोली चलाई, इसमें कुछ लोग हताहत हुए। लोगों ने भी पुलिस पर आक्रमण किया, किन्तु लाठी चार्ज करके उन्हें भी तितर-बितर कर दिया गया। आरा नगर में कफ्र्यू लगा दिया गया। शाहपुर थाने को लूटने की कोशिश हुई। बक्सर में कई सड़कों को क्षतिग्रस्त कर दिया गया। आबकारी की दूकानें, नावानगर की थाना, नहर इन्सपेक्शन बंगला और केन्द्रीय जेल पर भीड़ ने आक्रमण किया। जेल के बाहरी फाटक को खोलकर भीड़ प्रवेश कर गई किन्तु गोली चलाये जाने पर तितर-बितर हो गई। डुमरांव थाना के समीप भी पुलिस की गोली से चार लोग मारे गए। बक्सर में 17 अगस्त को डुमरांव गोली कांड के शहीदों की लाश लेकर एक बहुत बड़ी जुलूस निकाली गई। 15 अगस्त को ग्राम लसाढ़ी में सैनिकों के एक दल ने एक उत्तेजित भीड़ पर गोली चला दी। इसमें दस व्यक्ति शहीद हुए और अनेक घायल हुए।[22]

सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार के शाहाबाद (वर्तमान भोजपुर, बक्सर, रोहतास और कैमूर) के लोगों की भूमिका उल्लेखनीय रही है। महात्मा गांधी के आहवान् पर विद्यार्थियों, किसानों, महिलाओं ने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध असहयोग एवं विद्रोह की नीति अपनाई। जुलूस, बहिष्कार, डाक-तार, तिरंगा फहराना, रेल सेवाओं को बाधित करना आम घटना हो गई थी। ब्रिटिश सरकार ने लाठी चार्ज, गोलीबारी एवं गिरफ्तारी कर आंदोलन को दबाने का भरपूर प्रयास किया। परन्तु आन्दोलन मंथर गति से चलता रहा और समय चक्र के पूर्ण होने के साथ ही समाप्त हुआ।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आजादी की लड़ाई का जब भी तूर्यनाद हुआ शाहाबाद के लोगों ने पूरी निष्ठा से भाग लिय। शाहाबाद के लोगों का साहस, त्याग एवं बलिदान ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायी है।

****

संदर्भ ग्रंथ:-

1. भोजपुर, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार।
2. वहीं।
3. Holems, T.R.E., 1883, ' A History of the Indian Mutiny' W.H. Allen & Co. 13 Waterloo Place, London,P-461.
4. Secret Consultation, 30 जुलाई 1958, न०- 195,198
5. सिंह, अयोध्या, 2009, 'भारत की मुक्तिसंग्राम' प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली, पृ0 340
6. ग्रोवर, बी0 एन0, यशपाल, 1994, 'आधुनिक भारत का इतिहास', एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0, नई दिल्ली, पृ0 257
7. दत्त, के0 के0, 2014, ' बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास' भाग-1, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना, पृ0 सं0-11
8. Holems, T.R.E., 1883, ' A History of the Indian Mutiny' W.H. Allen & Co. 13 Waterloo Place, London,P-197.
9. दैनिक जागरण: रोहतास, बिहार, 30 मई 2014 दिन शुक्रवार।
10. दत्त, के0 के0 , 2014, 'बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास' भाग-1, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना, पृ0 सं0-350-351।
11. द सर्चलाइट, 20 मार्च 1921।
12. द सर्चलाईट, 7 अक्टूबर 1921।
13. दैनिक जागरण, पटना, रविवार, 07 अगस्त 2022।
14. File No, 168/ 1930, Bihar Political (Special) Department, Patna.
15. कुमारी, सरोज, 2005, ' Role of Women in the Freedom movement in Bihar' 1912-1942, Janki Publication, Patna, P-95.
16. ओझा, एन0 एन0: 2005, ' बिहार दिग्दर्शिका' प्रथम संस्करण, क्रानिकल पब्लिकेशंस (प्रा0) लि0, पृ0- 141।
17. दैनिक जागरण, पटना, रविवार, 13 अगस्त 2015।
18. ओझा, एन0 एन0: 2005, ' बिहार दिग्दर्शिका' प्रथम संस्करण, क्रानिकल पब्लिकेशंस (प्रा0) लि0, पृ0- 142।
19. नारायण, प्रो0 बलदेव, 1947, 'अगस्त क्रांति' पुस्तक जगत , पटना, पृ0-37
20. दत्त, के0 के0 , 2014, 'बिहार में स्वातंत्र्य आंदोलन का इतिहास' भाग-1, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी पटना, पृ0 सं0-36।
21. वहीं, पृ0-58।
22. वहीं, पृ0-82।